PRAJÑĀNA

(Research Journal) प्रज्ञान

Volume : 2-5, Issue : 1/2013-14 ISSN : 2278-1609

Km. Mayawati Government Girls Post Graduate College,
Badalpur, Gautambudha Nagar (U.P.) - 203 207

अद्वैतवेदान्त में अहिंसा का विधायक रूप एवं विधियां

नीलम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग

अहिंसा का भारतीय दर्शन की आचार मीमांसा में विशिष्ट स्थान है। उसका मनोवैज्ञानिक कारण है, और वह कारण है-जिजीविषा या उत्कट इच्छा। क्योंकि सभी प्राणी स्वअस्तित्त्व चाहते हैं, उन्हें सुख अनुकूल और दुःख प्रतिकूल है। अतः अहिंसा को आत्मा का स्वभाव कहा जा सकता है। अहिंसा का मूलाधार जीवन के प्रति सम्मान, समत्व भावना एवं अद्वैत भावना है। समत्व भावना से सहानुभूति तथा अद्वैत भावना से आत्मीयता उत्पन्न होती है। और इन्हीं से अहिंसा का विकास होता है। अहिंसा सकारात्मक एवं स्वीकारात्मक वृत्ति है, इसके विपरीत हिंसा नकारात्मक और निषेधमूलक वृत्ति है। इसका उदय अज्ञान से उत्पन्न होने वाली अनात्मबुद्धि के कारण होता है। स्व और पर का भाव ही हिंसा को जन्म देता है। अहिंसा आत्मभाव अर्थात् समूची सृष्टि में एक ही परमेश्वर का दर्शन होने पर मनुष्य की चेतना में सहज ही प्रकट हो सकती है। अहिंसा उस स्फुरण के प्रति असीम श्रद्धा और सम्मान की भावना की फलश्रुति है, जो ब्रह्म की चेतना में उत्पन्न हुई है और वह अद्वैत वेदान्त में एक है।

जिस क्षण उस अद्वैत तत्त्व की सर्वत्र अनुभूति होती है, उसी क्षण से सम्पूर्ण जगत् आत्मरूप हो जाता है। कोई भी, कुछ भी स्व से भिन्न, विजातीय और विधर्मी नहीं रहता। अतएव ऐसी स्थिति में हिंसा के लिये कोई स्थान नहीं रह जाता है। इस प्रकार अद्वैत भावना अहिंसा का आधार है-यह स्पष्ट है और अद्वैत वेदान्त में निरूपित मोक्ष के हेतुओं को वस्तुतः अहिंसा की विधियों के रूप में स्पष्टतया देखा जा सकता है। यथा-(1.) नित्यानित्यवस्तुविवेक (2.) इहामुत्रार्थफलभोगविराग (3.) शमादिषट्सम्पत्ति आदि। इन विधियों का विशिष्ट विवेचन अद्वैत वेदान्त में मिलता है। अतः अद्वैत वेदान्त में अहिंसा के विधायक स्वरूप एवं उसकी विधियों को उद्घाटित करना प्रस्तुत शोध-पत्र का लक्ष्य है।

भारतीय दार्शनिक परम्परा में वेदान्तदर्शन का महत्त्व सर्वातिशायी है। इस वेदान्तदर्शन का मूल उपनिषद् हैं और उपनिषदों के वैदिक रहस्यमय सिद्धान्तों को ही सूत्रबद्ध करते हुए महर्षि बादरायण व्यास ने ब्रह्मसूत्रों की रचना की। चूंकि इन ब्रह्मसूत्रों का तात्पर्य अत्यन्त गूढ है, अतः इनके स्पष्टीकरण के क्रम में ही विविध भाष्यों की रचना से अनेक वेदान्तसम्प्रदायों का उदय हुआ है, जिनमें शंकराचार्य का अद्वैतवाद, रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैतवाद, निम्बार्काचार्य का द्वैताद्वैतवाद, आचार्य मध्व का द्वैतवाद, वल्लभाचार्य का शुद्धाद्वैतवाद, श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु का अचिन्त्यभेदाभेदवाद प्रमुख हैं।

इन समस्त वेदान्त सम्प्रदायों में अद्वैतवेदान्त मुकुटमणि है। अद्वैतवेदान्त के प्रवर्तकों में गौडपाद एवं शंकराचार्य प्रमुख हैं, तथापि वेदान्तदर्शन में अद्वैतवाद की प्रतिष्ठा और